This will be the inside of cover page

सोनपुर मेला

विषय सूची

01 आंचलिक मनोरंजन और परंपरा का अनोखा संगम
09 ऐतिहासिक और धार्मिक संदर्भ
25 मेला से भावनात्मक लगाव
41 मेले का मुख्य आकर्षण यहां के पशु
51 मेला और व्यंजनों का लुफ्त
63 मनोरंजन, मेले का मुख्य पहलू
73 यहां ठहरने का रोमांच
81 आसपास के दर्शनीय स्थल

सत्यमेव जयते
Governor of Bihar

संदेश

विश्वप्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला 2014 के सुअवसर पर मैं बिहारवासियों व देशवासियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। यह मेला उत्तर बिहार के सारण जिलान्तर्गत सोनपुर में कार्तिक पूर्णिमा से प्रारंभ होकर महीने भर आयोजित होता है। गंगा एवं गंडक नदियों के पावन संगम पर आयोजित होने वाला यह मेला ऐशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा पशु मेला है। यह सामूहिक मेल–मिलाप और एकजुटता का प्रतिबिम्ब है, जिसमें हरिहर क्षेत्र सोनपुर के स्थानीय निवासियों का भी बहुमूल्य सहयोग प्राप्त होता है। यह मेला हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करता है एवं संपूर्ण विश्व के समक्ष हमारी पारंपरिक इंद्रधनुषी सांस्कृतिक छटा को उद्भासित करता है।

मैं बिहार पर्यटन द्वारा इस मेले को पर्यटकों के लिए आकर्षक स्वरूप प्रदान करते हुए नये कलेवर में आयोजित करने एवं मेले की स्मृतियों को जीवंत बनाए रखने हेतु 'कॉफी टेबल बुक' के प्रकाशन के लिए भी अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ० डी० वाई पाटिल
राज्यपाल, बिहार

Govt. of Bihar

संदेश

जीवन के विभिन्न रंगों से रेखांकित विश्व प्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला इस वर्ष 5 नवम्बर को कार्तिक पूर्णिमा से आयोजित होने जा रहा है। प्रत्येक वर्ष गंगा एवं गंडक नदियों के पावन संगम पर लगनेवालेइस मेला को ऐशिया महादेश की सबसे बड़ा पशु मेला होने का गौरव प्राप्त है। यह हमारी ग्रामीण जीवन की विशुद्ध छटा को प्रतिबिम्बित करती है। आज के आधुनिक प्रौद्यौगिक युग में इस तरह का लोकोन्मुख आयोजन हमारी पुरातन परंपरा की जीवंतता एक निरंतरता प्रदान करने के साथ–साथ हमारी आस्था और विश्वास को न केवल मजबूती प्रदान करता है, बल्कि हमें समग्रता के साथ अभिभूत करता है।

जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं के परिपेक्ष्य में श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों का यहाँ प्रवाह होता है। फलतः ऐसे आयोजनों का बहुआयामी विशिष्टता एवं प्रासंगिकता है। इस अवसर पर प्रकाशित होने वाला कॉफी टेबल बुक इस मेला को चित्रित–निरूपित करने का अद्भुत प्रयास है।

मैं इस अवसर पर जो हमारी विविधता में एकता, सौहार्द्र और शांति की संकल्पना को चरितार्थ करता है; आप सबों का स्वागत करता हूँ।

जीतन राम माँझी
मुख्यमंत्री, बिहार।

blissful bihar
BIHAR TOURISM

Govt. of Bihar

संदेश

विश्व प्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला, 2014 का आयोजन प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर दिनांक 05 नवम्बर, 2014 से 04 दिसम्बर, 2014 को किया जा रहा है।

पूरे एक महीने तक आयोजित होनेवाले इस मेले में वस्तुतः बिहार के ग्रामीण लोकाचार की झलक मिलती है। जब से पर्यटन विभाग को इस मेला की आयोजन करने का दायित्व दिया गया है; तब से विभाग हमेशा इसके प्रमोशन के लिए संकल्पित हैं एवं इस मेला को और अधिक आकर्षक–मोहक बनाने के लिए नए–नए आयामों–विकल्पों को समाहित कराने का प्रयास किया गया है। पर्यटन विभाग द्वारा इस बार "आर्ट एण्ड क्राफ्ट गाँव" एवं उसके अन्दर फूड प्लाजा स्टॉल का अवस्थापन कराया जा रहा है, जहाँ विभिन्न तरह के सुस्वादिष्ट व्यंजन परोसे जायेंगे, उम्मीद है इस मेले में विशेष आकर्षण का केन्द्र होंगे। इसके अलावा गंगा एवं गंडक के पवित्र संगम पर महाआरती एवं पर्यटकों की सुविधा हेतु पर्यटन विभाग के बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा टूर पैकेज एवं निकटवर्ती पटनावासियों हेतु सोनपुर मेला परिभ्रमण के लिए परिवहन–सह–टूर पैकेज की व्यवस्था की जा रही है।

उसके अलावा विभाग द्वारा इस अवसर को रेखांकित करने के लिए कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर आप सभी को मैं इस मेले की विविधता से अभिभूत होने के लिए सादर आमंत्रण देता हूँ।

डॉ० जावेद इकबाल अंसारी

पर्यटन मंत्री, बिहार

Govt. of Bihar

संदेश

हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर प्रतिवर्ष गंगा एवं गंडक नदियों के पवित्र संगम पर शुभारंभ होता है। हम सभी अवगत है यह ऐतिहासिक मेला विश्व के सबसे बड़े पशु मेला के रूप में प्रसिद्ध था, परन्तु समय के साथ इस मेला ने बहुआयामी स्वरूप को समाहित कर लिया। इस प्रकार यह मेला न सिर्फ सांस्कृतिक विविधता, कला एवं शिल्प की बहुरूपता एवं राज्य की स्थानीय व्यंजनों की बहुलता को प्रस्तुत करने का एक सशक्त मंच है बल्कि यह महत्वपूर्ण वाणिज्यिक क्रियाकलापों का केन्द्र भी हैं, जहाँ भारी संख्या में दूर–दराज के यथा कश्मीर, पंजाब, गुजरात आदि राज्यों उद्यमियों की सहभागिता होती है। अपने दामन में अनूठी ग्राम्य संस्कृति से परिपूर्ण यह मेला विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है और दिनों–दिन उनकी संख्या में वृद्धि हो रही है।

कला संस्कृति एवं युवा विभाग, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग एवं जिला प्रशासन के समन्वय के साथ पर्यटन विभाग द्वारा इस मेला को नए रूप में प्रोन्नत किया जा रहा है; जो बहुत ही सराहनीय प्रयास है।

पर्यटन विभाग द्वारा इस अवसर पर एक कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन भी किया जा रहा है। मैं इस अवसर पर उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ एवं मुझे पूरी उम्मीद है कि इस वर्ष भी यह मेला अपने स्वरूप में बहुत ही भव्य एवं उत्कृष्ट होगा।

अंजनी कुमार सिंह

मुख्य सचिव, बिहार

Govt. of Bihar

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि पावन कार्तिक पूर्णिमा से गंगा एवं गंडक के पवित्र संगम पर सोनपुर मेला का शुभारंभ हो रहा है। हम सभी जानते है कि यह मेला राज्य के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है।

कला संस्कृति एवं युवा विभाग, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग तथा जिला प्रशासन के सहयोग से पर्यटन विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, प्रदर्शनियाँ, "आर्ट एण्ड क्राफ्ट ग्राम" का अवस्थापन इत्यादि का आयोजन किया जा है जो इस मेले की भव्यता एवं ख्याति को बढ़ायेगा।

यळ भी हर्ष की बात है कि इस वर्ष इस अवसर पर पर्यटन विभाग द्वारा एक कॉफी टेबल बुक भी प्रकाशित किया जा रहा है। मैं उनके इस प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ।

एस० के० नेगी

विकास आयुक्त, बिहार

blissful bihar
BIHAR TOURISM

Govt. of Bihar

संदेश

यह सर्वविदित है कि बिहार सदियों से ज्ञान भक्ति, संप्रभुता एवं विश्वास का प्रतिमान रहा है। विश्व के इतिहास में यह भू–भाग प्रारंभ से सत्ता का केन्द्र रहा है, और आज भी "विविधता में एकता" की भावना यहाँ परिव्याप्त है।

राज्यवासियों ने हमेशा से एक साथ जुटकर असाधारण कीर्तिमान प्रस्थापित किया हैं, जिसका अवलोकन करने सहभागी बनने और इन मानकों को औरों ने सराहा है। सोनपुर मेला मेला ग्राम्य पृष्टभूमि की पारंपरिक मेला है, जो हमेशा एक नई स्फूर्ति प्रदान करती है। सोनपुर मेला की विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि यह अपने दामन में विशेषज्ञता, दिव्यता एवं पवित्रता को समाहित किये हुये है और यह हम सबों के लिए एक जीवनपर्यन्त सुखद अनुभूति है।

बिहार पर्यटन द्वारा इस वर्ष मेले को अविस्मरणीय भव्य और त्रुटिरहित रूप में सफल आयोजन कराने का बेहतर प्रयास किया गया है। पर्यटकों की सुविधा के लिये मेले को प्रोन्नत करने हेतु रणनीति बनाई गई है, जिसमें बिहार की पारंपरिक शिल्प कलाकृतियों का प्रदर्शन बेहत्तर परिवहन व्यवस्था एवं सुस्वादिष्ट विभिन्न प्रकार के व्यंजनों को भी पहली बार शामिल किया गया है। मैं इस अवसर पर सभी विभागों को धन्यवाद देता हूँ विशेषकर कला संस्कृति एवं युवा विभाग, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग तथा जिला प्रशासन जो इस मेला को अद्‌भुत स्वरूप देने में बराबर के भागीदार हैं।

मुझे पूरी उम्मीद है कि हमारा प्रयास आपकी बिहार भ्रमण को एक सुखद अनुभूति के रूप में आपकी स्मृति में सदैव बनाये रखेगा।

डॉ० दीपक प्रसाद

प्रधान सचिव, पर्यटन

आंचलिक मनोरंजन और परंपरा का अनोखा संगम

आंचलिक मनोरंजन और परंपरा का अनोखा संगम

मेला जो 'मेल' शब्द से बना है, बडा ही सुन्दर भाव लिए है जिसका अर्थ होता है मिलन या समागम किंतु यह समागम मात्र लोगों के मध्य ही नहीं होता है वरन इस अर्थ विशेष से थोड़ा अलग, जहां मन के कई कोनें उन्माद के शिखर पर जाकर मिलते हैं, जहां दबी हुई कुंठा नई उर्जा के लिए नये आयाम तलाश करती है, जब रोजमर्रा की जिन्दगी अपनी संवेदनाओं के रंग खोने लगती है तब यह समागम विभिन्न रंगों से सरावोर हो सामाजिक विकास में एक नवीन राह बनाती है। और हमारा बिहार भी जिसकी सामाजिक संरचना अत्यंत जटिल है और बेहद संवेदनशील भी उस अर्थ में एक बहुत बड़े समागम का मतलब महत्वपूर्ण होता है और इसी परिधि में सोनपुर का विशाल मेला बिहार के जनमन में काफी गहरा महत्व रखता है जो आंचलिकता, पारंपरिकता और मनोरंजन का बेजोड़ संगम है। इस मेले की विशिष्टता ने पूरी दुनिया में बिहार को खास पहचान दिलायी है। पशु मेले के रूप में यह पूरे एशिया में सबसे बड़े मेले के तौर पर पहचाना जाता है। एक महीने तक चलने वाले इस मेले की शुरुआत प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन से होती है। इसका कारण इसके पीछे जुड़ा पौराणिक–धार्मिक इतिहास है।

भारत में दो या अधिक नदियों के मिलने वाले स्थल को 'संगम' कहा जाता है। संस्कृत के इस अति विशेष शब्द के साथ कई परंपराओं का उदगम भी जुड़ा हुआ है, जैसे दो नदियाँ मिलकर इस संगम को परिभाषित करती हैं वहीं दूसरी तरफ दोनों नदियां जिन–जिन संस्कृतिओं को छूती हुई आती हैं, वह इस स्थली पर आकर खुद को उढेल देती हैं इसी कारण भारत देश के इन संगम स्थलों के पास कई तरह के धर्मिक अनुष्ठान, आयोजन व सामूहिक स्नान करने की परंपरा है जो कई विभेदों को खुद में समा लेती हैं। ऐसी ही एक जीती–जागती परंपरा का सबसे सशक्त उदाहरण है, सोनपुर मेला।

सारण जिले के सोनपुर नामक स्थान पर गंडक और गंगा के पवित्र संगम पर सोनपुर मेला का आयोजन होता है। इसी स्थान पर गंडक नदी गंगा में आकर समाहित होती है। दोनों पवित्र नदियों के मिलने वाले इस स्थल के चारों तरफ कई पौराणिक कहानियां और मान्यतायें बिखरी हुई हैं, जो स्थानीय लोगों की जुबान से सुनी जा सकती हैं।

गंडक नदी का उदगम स्थल नेपाल है और दक्षिणी नेपाल में यह 'नारायणी' के नाम से जानी जाती है। यह वही नदी है, जहां के पवित्र शालीग्राम शिला या नारायण शिला को भगवान विष्णु का प्रतिरूप या प्रतिकारात्मक रूप मानकर पूजन करने के काम में लाया जाता है। पुराण में वर्णित कहानी के अनुसार, गंडकी एक वेश्या की बेटी थी, जिसकी भक्ति की परीक्षा भगवान विष्णु ने स्वयं ली थी। उसके भक्तिभाव से अति प्रसन्नचित होकर भगवान विष्णु ने वरदान दिया था कि उसके हृदय में भगवान सदा वास करेंगे। इसलिए गंडक नदी के तल में विष्णु स्वरूप 'नारायण शिला' नामक पवित्र पत्थर पाया जाता है। यह हिन्दूओं के लिए परम पूज्य है।

गंगा और गंडक के इस संगम स्थल पर कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर हिन्दू धर्मावलंबी पवित्र स्नान करते हैं। ताकि भगवान विष्णु की विशेष कृपा उन पर हो। यह मान्यता है कि विष्णु के मत्स्य अवतार का अवतरण इसी दिन हुआ था।

ऐतिहासिक और धार्मिक संदर्भ

ऐतिहासिक और धार्मिक संदर्भ

इसकी कल्पना करना थोड़ा मुश्किल लगता है कि इस मेले में करीब 2500 वर्ष पहले से लोग पशुओं की खरीद–बिक्री करने और अदला–बदली करने के लिए जुटते थे। वे अपनी ज़रूरत के मुताबिक पशुओं को लेकर यहां से जाते थे। उस समय युद्ध के लिए हाथी और घोड़ों की मांग बहुत ज्यादा होती थी। जबकि विभिन्न प्रजाति के मवेशी किसानों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र हुआ करते थे। यह बात बेहद प्रचलित है कि आदीकाल में महान सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य इस मेले से हाथी और घोड़े खरीद कर ले जाया करते थे। युद्ध में लड़ने वाले ये सभी बेहद दमदार हाथी और घोड़े हुआ करते थे, जिन्होंने इतिहास में पहली बार मौर्य सम्राट को पूरे भारतीय उप–महादेश में अपनी विजय पताका लहराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

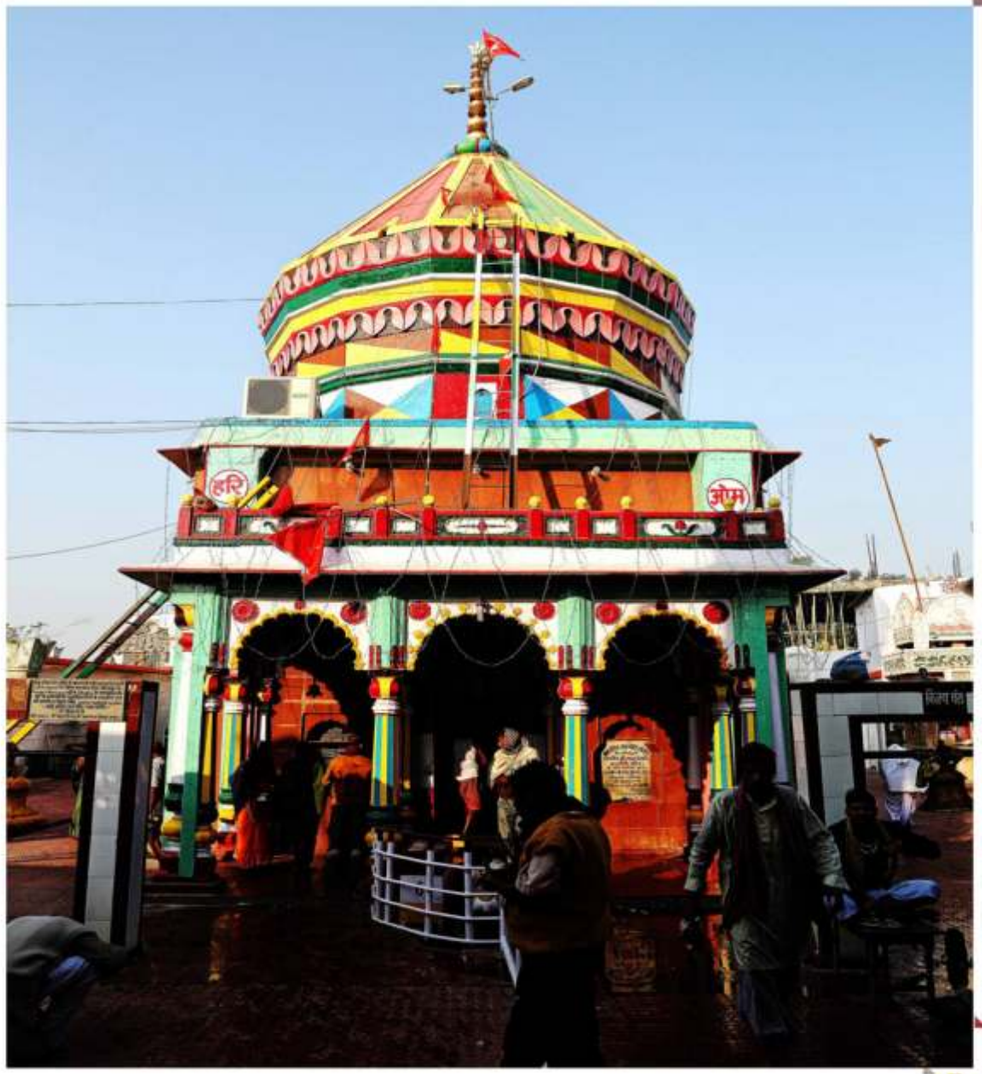

पुराण में प्रचलित एक कथा के अनुसार, इसी स्थान पर हाथियों के राजा गजेन्द्र के प्राणों की रक्षा भगवान विष्णु ने मगरमच्छ से की थी। कहा जाता है कि एक गंदर्भ राजा 'हुहु' हुआ करते थे जो अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध थे, एक बार वह किसी गंदर्भ कन्या के साथ स्नान करने झील में गये और उन्माद–उन्माद में उनका पैर एक ऋषि को छू गया मगर 'हुहु' को इसका भान नहीं रहा और वह उस कन्या के साथ ठीठोलियाँ करते रहे जिससे वहां स्नान करते हुए ऋषि को उनपर क्रोध आ गया और उसी क्षण उन्होनें गंदर्भ राजा 'हुहु' को मगरमच्छ बन जाने का श्राप दे दिया दुसरी तरफ इसी स्थान सोनपुर में मौजूद घने जंगलों में गजेन्द्र रहा करते थे जो वास्तव में राजा इंद्रायमना थे जो बहुत ही कोमल स्वभाव के थे लेकिन एक बार उन्होनें अगस्त्यमुनि का अनजाने में अपमान कर डाला, जब अगस्त्यमुनि ध्यान की अवस्था में लीन थे तभी राजा इंद्रायमना उनके आश्रम में पहुंचकर भी उनको नहीं पहचानते हैं जिसके कारण महर्षि अगस्त्य ने राजा को श्राप देकर हाथी बना दिया, बाद में वे हाथियों के झूंड के राजा बन गये।

एक दिन जब गजेन्द्र पानी पीने के लिए गंडक नदी में गये तो अचानक से उन पर एक मगरमच्छ ने हमला कर दिया। इन दोनों महान राजाओं के बीच कई वर्षों तक युद्ध चला बिना किसी की हार के लेकिन अंत में हाथी राजा गजेन्द्र ने भगवान विष्णु 'हरि' से मदद के लिए गुहार लगाई। भगवान ने प्रकट होकर मगरमच्छ का अपने चक्र से वध कर उसे श्राप मुक्त किया। विष्णु के आशीर्वाद से राजा इंद्रायमना को भी श्राप से मुक्ति मिल गई।

यहां स्थित हरिहरनाथ मंदिर भगवान विष्णु का मंदिर है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालू संगम में सुबह स्नान करने के बाद मंदिर में दर्शन करने के लिए जाते हैं।

किराये पर एक नाव लेकर हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं के स्नान के मनोरम दृश्य का आनंद नजदीक से उठाया जा सकता है।

हरिहरनाथ भगवान शिव का दूसरा नाम भी है।हिन्दूओं की एक मान्यता के मुताबिक यहां मौजूद मंदिर को भगवान राम ने उस समय बनवाया था जब वे सीता के स्वयंवर में शामिल होने के लिए जनकपुर जा रहे थे। हालांकि रामायण की कथा में इस तरह की किसी कथा या प्रसंग में कोई जिक्र नहीं मिलता है। इस क्षेत्र के आस पास रामायणकाल के अलग–अलग काल से जुड़े कई मंदिरों का जिक्र मिलता है। हरिनाथ के इस मंदिर में राम से जुड़ी कई बातें सर्वत्र मौजूद हैं। वर्तमान में मौजूद मंदिर का ढांचा बहुत पुराना नहीं है। इसके साधारण वास्तुविद का निर्माण राजा राम नारायण ने मुगल काल के दौरान करवाया था। हाल के समय में बिरला ने इस का फिर से निर्माण करवाया था।

यहां एक काली मंदिर या काली स्थान भी है। इसके अलावा पंच दर्व मंदिर और नेपाली मंदिर भी आसपास स्थित हैं। तीर्थयात्री इन सभी मंदिरों का दर्शन बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं। काली मंदिर में शुंगकालीन पौराणिक पत्थर के खंभे मौजूद हैं।

हरिहरनाथ मंदिर यहां के पास के स्टेशन के लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जिसके आस–पास श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए कई धर्मशालाएं मौजूद हैं। बाबा हरिहरनाथ मंदिर की प्रसिद्धि का पता इस बात से ही चलता है कि यहां प्रत्येक वर्ष दूर–दूर से लाखों लोग कार्तिक पूर्णिमा के स्नान के बाद मंदिर में भगवान को जल अर्पण करने जाते हैं।

मेला से भावनात्मक लगाव

मेला से भावनात्मक लगाव

सोनपुर मेले से यहां के लोगों का एक भावनात्मक लगाव है। स्थानीय लोग इस मेले को अपनी जिन्दगी के बेहद करीब से जोड़कर देखते हैं। मेले में कई गांवों के लोगों का जुटान होता है और वे परंपराओं का आपस में आदान–प्रदान करते हैं। इस दौरान यहां कई ग्रामीण संस्कृतियों का मिलन भी देखने को मिलता है। पौराणिक काल से ही यह शादी–विवाह और नई रिश्तेदारी की शुरु आत करने का प्रमुख केन्द्र रहा है। हिन्दू धर्म के अनुसार, कार्तिक पूर्णिमा के बाद से विवाह के 'लगन या मुहूर्त' की शुरु आत हो जाती है। लोग वर–वधु की तलाश शुरू कर देते हैं। यह मेला ऐसे लोगों को भी आपस में मिलकर बात करने का माध्यम प्रदान करता है। पशुओं की खरीदारी के साथ–साथ मनोरंजन, घूमना–फिरना, साल भर के लिए महत्वपूर्ण सामानों की खरीद के अलावा नातेदारी–रिश्तेदारी की बातों को स्थापित करने में इन मेलों की भूमिका को रेखांकित किया जाता रहा है।

कार्तिक पूर्णिमा के समय यहां हल्की ठंड दस्तक देने लगती है। बावजूद इसके पूर्णिमा के दिन स्नान करने के लिए यहां लोगों का हुजूम शाम से ही जमा होने लगता है। सुबह की पहली किरण के साथ ही बडी संख्या में लोग के गंगा और गंडक के संगम स्थल पर बने घाटों में डूबकी लेने का सिलसिला शुरू हो जाता है। लोग पवित्र स्नान करने के बाद धार्मिक अनुष्ठान और पूजा–पाठ शुरू करते हैं। यहां अवस्थित हरिहरनाथ मंदिर में काफी बड़ा जन सैलाव दर्शन करने के लिए उमड़ता है। प्रभु हरि के जयकारे से पूरा क्षेत्र गुंजायमान हो उठता है। यह भी एक वजह है, जिससे पूरे क्षेत्र को हरिहर क्षेत्र कहा जाता है। सोनपुर मेले का एक दूसरा नाम हरिहर मेला भी है।

यहां आने वाला हर व्यक्ति पुण्य प्राप्त करने के लिए पवित्र स्नान करने में विश्वास रखता है। इस स्नान के बाद ही लोग मेले की रौनक देखने के लिए निकलते हैं। आस–पास के लोगों की रोजमर्रा की जीवन शैली में यह मेला सिर्फ उत्सवी माहौल ही लेकर नहीं आता है। बल्कि धर्म और अध्यात्मक को भी अपने में समाहित किये आता है।

इस पवित्र वातावरण में धार्मिक मंत्रों की गुंज से सारा माहौल बेहद मनोरम हो जाता है। इसके साथ एक महीने तक चलने वाले सोनपुर मेले का आगाज हो जाता है। मंत्रो की गुंज के बीच हजारों संख्या में पहुंचे पशुओं के गले में बंधी घंटियों की आवाज से यहां का सारा वातावरण दिलकश हो जाता है। चेन और रस्सी में बंधे हाथी, घोड़े समेत अन्य कई जानवरों के अनोखे करतब भी देखने को मिलते हैं। इन जानवरों के ट्रेनर इन्हें अपने सधे हुए अनुभव के आधार पर करतब दिखाने के लिए उत्साहित करते हैं। हाथी के करतब और घोडों की दौड़ इस मेले के सबसे खास आकर्षणों में एक हैं। इनका आयोजन विशेष स्तर पर किया जाता है।

इस मेले से जुड़ी पौराणिक कथाओं, किवदंतियों या कहानियों को याद करने वाले कुछ वृद्ध या लगातार कई वर्षो से यहां आने वाले बिरले भी मिल जाएंगे। इन लोगों के अनुसार, जमींदार और शासक यहां आकर अपनी पसंद के पशु खासकर हाथी और घोड़े ले जाया करते थे। इस मेले में शामिल होना शान की बात समझा जाता था। असम से यहां हाथियों को लाकर उन्हें कई तरह का प्रशिक्षण दिया जाता था। ताकि वे युद्ध के साथ–साथ राजा के दरवार में मेहमान नवाजी के काम भी आ सकें। सोनपुर मेले से चक्र वर्ती सम्राट चंद्रगुप्त की जुड़ी अनगिनत कहानियां यहां सुनने को मिलती हैं। गांव वाले इन कहानियों को बड़ी रूचि से सुनाते हैं।

बदलते समय के साथ मेले के स्वरूप में भी बदलाव आया है। हालांकि इसका मूल स्वरूप अभी भी बरकरार है। किसी जमाने में जंग के मैदान में प्रयोग होने वाले जानवर अब मनोरंजन और पशु संसाधन के माध्यम बन गए हैं। कई प्रजातियों के कुत्ते, रंग–बिरंगे पंखों वाले पक्षियों, खरगोश, विदेशी नस्ल वाले सूअर, देशी–विदेशी नस्ल के गाय, भैंस समेत अन्य मवेशी यहां काफी बड़े तादाद में देखने को मिलते हैं। यहां समूचे बिहार और पड़ोसी राज्यों के पशु पालक या ग्रामीण परिवेश के लोग अपने जानवर खरीदने या बेचने के लिए जमा होते हैं। अपने–अपने पशुओं के साथ इनका जमावड़ा इस स्थान को खास किस्म की रौनकता प्रदान करता है। राजधानी पटना के नजदीक होने के कारण इस मेले में आंचिलकता की सुगंध के साथ आधुनिकता की चमक भी देखने को मिलने लगी है। नई चमक–दमक वाली दुकानों में कई तरह के आधुनिक सामान भी यहां काफी देखने को मिल जाते हैं।

मेले का मुख्य आकर्षण यहां के पशु

मेले का मुख्य आकर्षण यहां के पशु

गाय, बैल, भैंस समेत अन्य मवेशियों के गले में बंधी घंटियों की टन–टनाहट वाली मधुर आवाज से पूरा वातावरण भर जाता है। हर सुबह–सवेरे मेले सूर्योदय के साथ ही ये आवाजें सोनपुर मेले का आगाज करती जान पड़ती हैं। खासातौर से सुबह के समय में स्पष्ट सुनायी देने वाली ये आवाजें किसी मधुर संगीत से कम नहीं लगती हैं। यहां आने वाले लोगों को भी यह उत्सवी माहौल का अहसास कराती हैं। वहीं, शाम के वक्त टन–टनाहट भरी यहीं आवाजें 'गोधूली बेला' का एहसास कराती हैं। गोधूली शब्द शायद इन्हीं कारणों से बना है, जब संध्या पहर गांव में मवेशी खेतों से अपना चारा चर कर झुंड में लौटते हैं, तो उनके गले में बंधी घंटियों से निकलती टन–टन की आवाज के आधार पर ही विद्यमानों ढलती सांझ का दूसरा नाम गोधूली बेला रख दिया है। यहां सोनपुर मेले में भी इस वक्त बिलकुल उसी निश्छलता की रोजाना अनुभूति कराती है, जिससे यहां का मनोरम माहौल देखते ही बनता है।

यहां के पशु व्यापारी जिस तरह से अपने पशुओं के दाम बोलते हैं और इनमें जिस तरह से मोल–तोल करते हैं, वे काफी रोचक होते हैं। यहां तकरीबन सभी प्रजाति, आकार, रंग और किस्म के जानवर मिलते हैं। यहां कोई भी खरीददार किसी जानवर को खरीदने से पहले उसके खुर से लेकर सिंग तक की अच्छी तरह से जांच कर सकते हैं। इन जानवरों की पहचान अलग–अलग करने के लिए इनके सिंग और पैर को अलग–अलग तरह से सजाते हैं। कई पशु मालिक अपने हाथ के गुलाबी या नीले रंग की छाप मवेशियों की सफेद पीठ पर बनाते हैं। ताकि सैकड़ों मवेशियों की झुंड के बीच भी इनकी पहचान आसानी से की जा सके।

मेले का मुख्य आर्कषण यहां के पशु

राजा–महाराजा के समय से ही हाथियों की लेन–देने के लिए खासतौर जाना जाने वाले इस मेले में आज भी हाथियों की मौजूदगी खास पहचान स्थापित करती है। आदीकाल से ही हाथी को बेहद पवित्र माना जाता है। सिंधु घाटी की सभ्यता काल से ही हाथियों को पालने की परंपरा रही है। आज हाथियों का प्रयोग बड़े बोझ या भार उठाने के लिए किया जाता है। कई मंदिरों में आज भी हाथियों को पूजन के लिए पाला जाता है। इन मंदिरों में कई विशेष अवसरों पर आयोजित होने वाले धार्मिक अनुष्ठानों में खासतौर से हाथियों को शामिल किया जाता है। लोग इन्हें बडी श्रद्धा के साथ पूजते हैं। वर्तमान में वन्य जीवन अधिनियम के प्रावधानों के सख्ती से लागू होने की वजह से हाथियों के व्यापार को प्रतिबंधित कर दिया गया है। इस वजह से इनकी खरीद–बिक्री के स्थान पर हाथियों को दान देने का रिवाज है। इन्हें मुख्य रूप से देखने के आकर्षण के तौर पर यहां लाया जाता है। सुबह–सुबह निदयों में हाथियों के स्नान की परंपरा इस मेले की विशेष शोभा है। इसके बाद हाथियों का ऋंगार कर इनकी शोभा यात्र निकाली जाती है। हाथियों को चमकीले वस्त्रों से सजाया जाता है। पौराणकि काल से ही हाथियों की दौड निकालने की भी परंपरा आज तक कायम है। ताकि लोग इनकी तरफ आकर्षित हो सके। हाथी खरीदने वालों को इनकी कीमत नहीं बतायी जाती है।

एक बेहद पुरानी परंपरा के अनुसार, खरीदने और बेचने वाले दोनों एक कपड़े से अपने हाथों को ढककर एक दूसरे की ऊंगलियों को पकड़ने के आधार पर इसकी कीमत तय की जाती है। दाम में मोल–तोल भी ऊंगलियों को पकड़ कर ही की जाती है। इनके बीच तय हुई कीमत बेहद ही गोपनीय होती है और इसकी जानकारी सिर्फ इन्हीं दोनों को होती है।

इस मेले में दूसरा सबसे प्रमुख आकर्षण का केन्द्र घोड़े होते हैं। इनकी मांग आज भी काफी है। कृषि से जुड़े और अन्य तरह के कार्य करने के लिए घोड़ों का प्रयोग काफी होता है। इस मेले में आज भी कई अच्छे नस्ल के अश्व देखने को मिल जाते हैं। ऐतिहासिक काल से ही घोड़ों का प्रयोग राजा–महाराजा अपना प्राक्र म दिखाने के लिए घोडों का खासतौर से प्रयोग करते थे। अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए किया जाने वाला विशेष अश्वमेघ यज्ञ इसका सबसे बडा प्रतिक है। वर्तमान में घोडों का प्रयोग कई ग्रामीण इलाकों में यातायात के साधन के तौर पर किया जाता है। इनके अलावा अन्य कई पशु भी हैं, जिनका व्यापार यहां बडे पैमाने पर होता है।

मेला और व्यंजनों का लुफ्त

मेला और व्यंजनों का लुफ्त

एक महीने तक चलने वाले इस सोनपुर मेले में विभिन्न संस्कृतियों और परिवेश के लोगों का मिलन तो होता है। आंचलिक लोक रंग के साथ–साथ विभिन्न प्रजातियों के पशुओं का झुंड होता है। इतनी बड़ी संख्या में जहां लोगों का जमावड़ा हो और वहां खाने–पीने का जिक्र न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता।

आंचलिकता से जितने विभिन्न रंग यहां दिखते हैं, उतनी ही भिन्नता व्यंजनों में भी देखने को मिलती है। इस मेले में आधुनिकता का सबसे ज्यादा प्रभाव अगर कहीं दिखता है, वह खाने–पीने के लगने वाले स्टॉल पर। पारंपरिक और ठेंठ देशज व्यंजनों के बीच पाव–भाजी, इडली, डोसा, छोले भटूरे जैसे अन्य राज्यों के व्यंजनों के अलावा बर्गर, चाउमिन, मनचूरियन जैसे चायनीज व्यंजनों की भी यहां भरमार रहती है। घुघनी, कचौरी, जलेबी, लिट्टी–चोखा, चाट, समोसा, खाजा समेत अन्य देशज व्यंजनों के बड़ी संख्या में स्टॉल लगे दिखते हैं। लिट्टी–चोखा यहां के लिए खासतौर से आकर्षण का केन्द्र रहता है। स्थानीय से लेकर बाहरी लोग इसका खासतौर से स्वाद चखना चाहते हैं। यहां मिलने वाले चोखे आलू, टमाटर और बैंगन को आग पर सेंक कर खास तरीके से बनाया जाता है। इस वजह से इसका स्वाद काफी अलग होता है।

कोयले की अंगीठी पर बनी आटे और चने के सत्तु से गोल–गोल बनी लिट्टी और चोखे का स्वाद बेहद निराला होता है। इस मेले में आंचलिकता का बोध कराने वाली सबसे महत्वपूर्ण मिठाई जलेबी है। गरम जलेबी को हर कोई खाते और घर ले जाते हैं। जलेबी छानने की मीठी खुशबू मेले के वातावरण में आपके भूख को लगातार जगाये रखती हैं। इसी कारण जो लोग ज्यादा खाने से परहेज करने वाले भी यहां जमकर खाते हैं। यहां एक बात यह भी है कि आपको खाने की नई–नई चीजें देखकर भी मन उसे खाने को ललायित होता है और आप सहसा ही उस स्टॉल पर पहुंच जाते हैं। सोनपुर मेले की जलेबी का स्वाद चखे बिना मेला घूमने का आनंद अधूरा ही है।

शाकाहारी के अलावा मांसाहारी खाने का शौक रखने वालों के लिए यहां की मछली खासतौर से पसंद की जाती है। आसपास के तालाबों से मछली लाकर इन्हें फ्राई करके बड़ी संख्या में स्टॉलों पर बेचा जाता है। कई किस्मों की मछलियों का स्वाद चखने को यहां मिल जाता है। भुंजी हुई मछली के साथ लिट्टी खाने का भी खासा प्रचलन देखने को मिलता है। सोनपुर मेले में तास और मटन भी मिलता है जो बिहार के बेतिया जिले में काफी प्रसिद्ध है, तास–मटन चावल के चुड़ (पोहा) के साथ तावे पर भुना हुआ बकरी के मटन के साथ खाया जाता है जो अपने स्वाद के लिए बेहद लोकप्रिय है। स्थानीय लोगों के बीच यह बेहद ही पसंदीदा व्यंजन है। इन व्यंजनों के बीच एक खास चीज मिलती है, वह है भुंजा। चावल, चना, मूंगफली, मटर, समेत अन्य अनाजों को मिट्टी की खपड़ी पर भुंजकर बेचा जाता है। इसकी सोंधी खुशबू बरबस ही लोगों को अपनी तरफ आर्कषित करती है। कई तरह के भुंजा को मिलाकर झाल–मुढ़ी बनाकर बेचा जाता है।

मेला घूमने वाले अधिकांश लोगों के हाथों में इसे फांकते हुए देखा जा सकता है साथ–साथ मूंगफली को सेंक कर भी जो चिनियाबेदाम (मूंगफली) के नाम से भी प्रसिद्ध है लोग अपना टाईम–पास करते हैं। यही वह क्षण है जब लोग नरेगा और मनरेगा जैसे स्किम को घर पर छोड़ यहां जमकर सोनपुर की स्थली पर मौज उड़ाते हैं, उनके सामने आज का वक्त जो शायद फिर कब आये न आये तो टूट पड़ो इस रंग में कल कौन जाने सूरज कहां से निकलेगा। इसी परिकल्पना को संजोय आज भी लाखों की तादाद में लोग पूरे एक महीने तक यहां आते हैं, मौज–मस्ती और मनोरंजन के बीच लोग गाहे–बगाहे ही अपनी पृष्ट्भूमि और शालीनता एक दूसरे को देकर अपनी राह चले जाते हैं। देशज और आधुनिक पृष्ट्भूमि के परिचायक व्यंजनों का संगम तो मात्र बहाना है पास आने का अपने परिवार के और निकट जाने का। यह महासंगम एक अभ्यास है सामाजिक ढांचे में रंग भरने का।

मनोरंजन, मेले का मुख्य पहलू

मनोरंजन, मेले का मुख्य पहलू

सुबह की तेज धूप जब शाम ढलने के साथ ही सिंदूरी होने लगती है, तो इसकी लालिमा पूरे आकाश को मनोरम बना देती है। शाम होते ही सूरज की गर्मी शांत होने लगती है और हल्की धुंध वातावरण पर हावी हो जाती है। मंदिरों में संध्या आरती शुरू हो जाती है। आरती खत्म होने के साथ ही मेले के दिनभर की गतिविधि थोड़ी मंद पड़ जाती है। दिन–भर की भाग–दौड़ और धमा–चौकड़ी के बाद मेले पर मनोरंजन का चटकीला रंग चढ़ने लगता है। रात के अंतिम पहर से पहले तक यह रंग पूरे शबाब पर होता है। तमाम दुकानें रंग–बिरंगी रौशनी से नहाने लगती है। पूरा वातावरण कृत्रिम प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है।

ऐसा नहीं है कि थकान मिटाने के लिए लोग आराम करने लगते हैं। बल्कि थकान मिटाने के लिए लोग मनोरंजन के रंग से सरावोर होने लगते हैं। यहां मनोरंजन के कई साधन देखने को मिलते हैं। व्यक्ति विशेष अपनी इच्छा के अनुसार इनका चयन कर आनंद उठा सकते हैं। मौत का कुआं, नौटंकी, थियेटर, एयर रायफल सूटिंग, झूला, जादू के शो, कई तरह के करतब दिखाने वाले कई तरह के झूले समेत अन्य कई तरह के संसाधन काफी संख्या में यहां उपलब्ध होते हैं। कई तरह के फिल्मी गानों पर डांस के कार्यक्रम देखने के लिए यहां लगने वाले थियेटर खासतौर से मशहूर हैं। मेले में इन थियेटरों की रौनक सबसे ज्यादा होती है। कई लोग यहां रात में सिर्फ थियेटर देखने के लिए ही आते हैं।

मेले में मनोरंजन के सबसे लोकप्रिय और सशक्त माध्यम के तौर पर इन थियेटरों को देखा जाता है। हजारों की संख्या में लोगों का हुजूम इन्हें देखने के लिए हमेशा जुटा रहता है। इन थियेटरों में फिल्मी गानों पर नृत्य के अलावा बीच–बीच में कामेडी शो, किसी मुद्दे पर लघु नाटक समेत अन्य नाटय विद्याएं भी देखने को मिलती हैं। कई तरह की विद्याओं को अपने में समाहित करने वाले इन थियेटरों की डिमांड सबसे ज्यादा है। बदलते समय के साथ इनका स्वरूप भी बदला है। नए फिल्मी गानों पर नृत्यांगनाएं बड़ी संख्या में पुरुषों को अपनी तरफ खिंचती हैं। थियेटरों के बाहर डांसरों की कई दिलकश अदाओं में बड़ी संख्या में पोस्टर लगे दिखते हैं। स्थानीय स्तर पर इनकी लोकप्रियता किसी फिल्मी स्टार की तरह ही होती है।

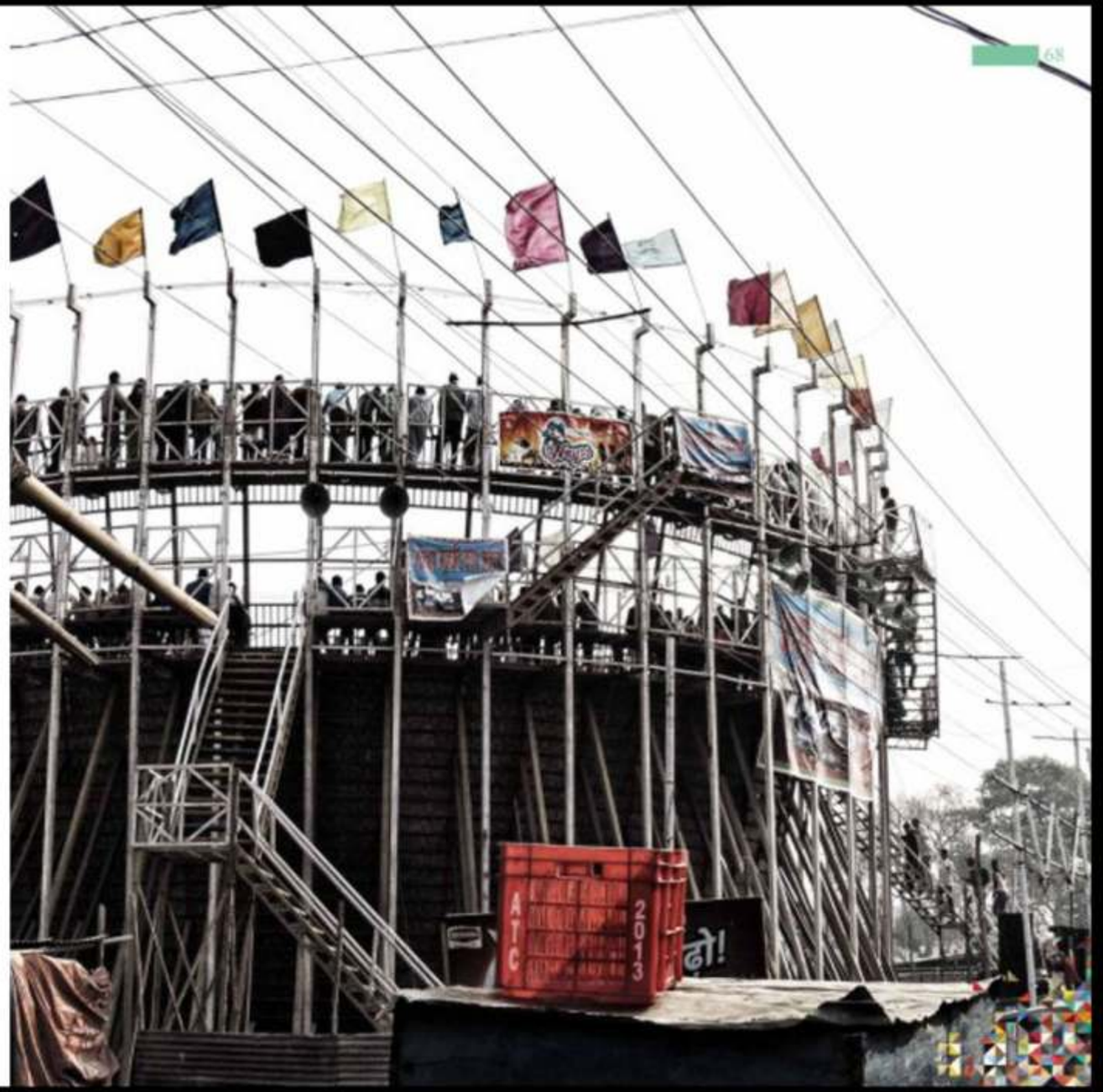

तमाम तरह की दुकानें सजी मिलेंगी यहां

पशुओं की खरीद–बिक्री के अलावा रोजमर्रा की जरूरतों के अलावा कई तरह के सामानों की यहां जबरदस्त बिक्री होती है। सैकड़ों की संख्या में विभिन्न उत्पादों के स्टॉल यहां लगते हैं। फर्नीचर, घरेलू जरूरत के सामान, सजावटी वस्तु, कपड़े, शॅल, चादर आदि तमाम तरह के उत्पाद यहां मिलते हैं। मेले की लोकप्रियता को देखते हुए कुछ वर्षों से यहां कई ब्रांडेड कंपनियां भी अपना सामान बेचने के लिए स्टॉल लगाने लगी हैं। स्थानीय और पूरे राज्य की काश्तकारी, हस्तशिल्प और हथकरघा वाले उत्पादों के अलावा यहां गुजरात, हरियाणा, यूपी, महाराष्ट्र, जम्मू–कश्मीर समेत अन्य राज्यों के व्यापारी भी आकर अपना स्टॉल लगाते हैं। नवम्बर में अयोजित होने वाले इस मेले से ही राज्य में ठंड दस्तक देने लगती है। इसके मद्देनजर यहां ऊलेन और गर्म कपड़ों की बिक्री खासतौर से होती है। कश्मीरी चादर, कंबल, स्वेटर, जैकेट, मफलर से लेकर तमाम तरह के ऊनी कपड़ों को खरीदने के लिए स्थानीय लोग यहां हर साल आते हैं। ग्रामीणों के लिए गर्म कपड़ों की खरीदारी का यह मेला प्रमुख केन्द्र रहा है। इस वजह से यहां सबसे ज्यादा गर्म कपड़ों की दुकानें सजती हैं। तिब्बत के ल्हासा और कश्मीर से आकर यहां ऊनी कपड़े बेचने वाले व्यापारियों की संख्या भी काफी होती है।

ऊनी कपड़ों के बाद यह मेला लकड़ी के फर्नीचर के लिए भी खासतौर से पहचाना जाता है। लकड़ी पर बेहतरीन कारीगरी और शानदार नक्काशी वाले फर्नीचर यहां काफी दिखते हैं। स्थानीय के अलावा देश के कई राज्यों से लकड़ी के अच्छे–अच्छे कारीगरों का यहां जमावड़ा लगता है। ये लोग बने बनाए फर्नीचर बेचते हैं या ऑडर लेकर यहीं फर्नीचर तैयार करते हैं।

किसानों के लिए भी यह मेला खासा अहमियत रखता है। कृषि कार्यों में प्रयोग होने वाले कई तरह से औजार और मैकेनिकल टूल्स की यहां अलग से प्रदर्शनी लगती है। इस प्रदर्शनी का अयोजन राज्य कृषि विभाग करता है। इस दौरान कृषि विशेषज्ञ या सलाहकार किसानों को फसलों, उनकी बीमारियों और बचाव की जानकारी देते हैं। इस वजह से बड़ी संख्या में किसान इस मेले में आते हैं। साल–भर जरूरत पड़ने वाले औजार इन्हें अनुदानित दर पर दिये जाते हैं। बीज, खाद समेत अन्य संसाधनों की भी काफी खरीद–बिक्री होती है। किसानों के लिए यह मेला एक पथ–प्रदर्शक की भूमिका निभाता है। चावल, गेहूं और अन्य अनाज के बीजों के अलावा विभिन्न किस्मों की सब्जी की उन्नत प्रजाति के बारे में यहां प्रचुर मात्रा में जानकारी मिलती है।

इस मेले से कई ऐसे सामान जिन्हें स्थानीय लोग पूरे साल–भर की जरूरत के मुताबिक खरीदकर ले जाते हैं। इनमें मसाले मसलन जीरा, काली मिर्च, दालचीनी, इलायची आदि सबसे प्रमुख होते हैं। रोजमर्रा के किचन में प्रयोग होने वाले कई सामानों को भी यहां से काफी संख्या में लोग खरीदते हैं।

यहां ठहरने का रोमांच

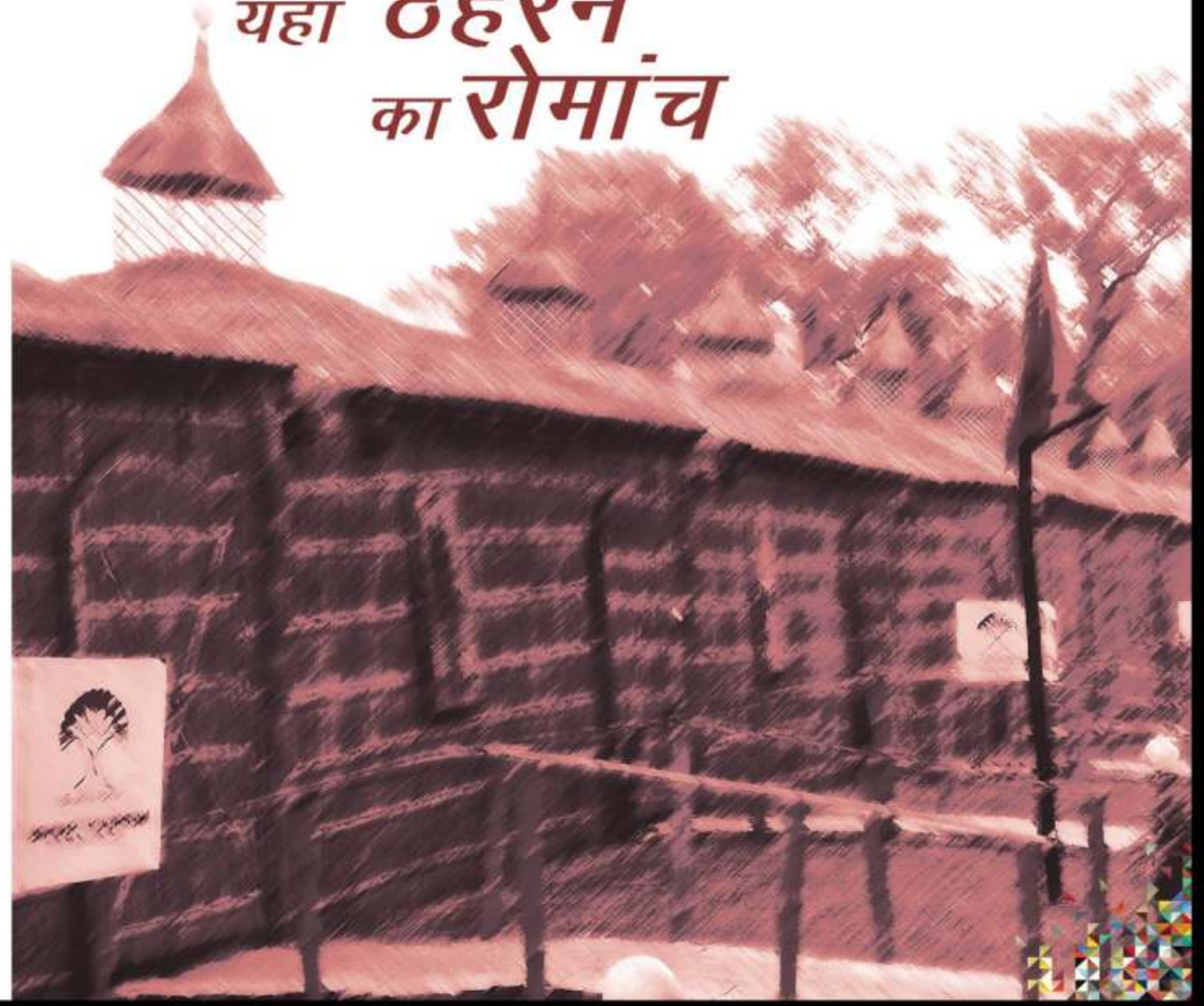

यहां ठहरने का रोमांच

सोनपुर मेले में ठहरने का अपना अलग ही रोमांच है। यहां बने आश्रय स्थलों में पनाह ली जा सकती है या सोनपुर से करीब पांच किमी दूर स्थित हाजीपुर में कुछ अच्छे होटल मौजूद हैं। सोनपुर में सरकारी रेस्ट हाउस हैं, लेकिन वे सिर्फ अधिकारियों या कुछ वीआईपी के लिए ही सुरक्षित होते हैं। पर्यटन विभाग हर वर्ष यहां विदेशी पर्यटकों के लिए आधुनिक सुविधाओं से लैस कुछ मॉर्डन हट बनवाता है। प्राकृतिक वस्तुओं मसलन बांस, घास–फूस, बेंत समेत अन्य से बनी इन झोपड़ियों के अंदर गद्देदार बेड, टेबल–कुर्सी, कप–बोर्ड समेत तमाम सुविधायुक्त संसाधन मौजूद होते हैं। इन झोपड़ियों की खूबसूरती देखते ही बनती है। इनकी बुकिंग ऑनलाइन भी होती है। सभी झोपड़ियां एसी और आधुनिक बाथरूम से लैस होती हैं। प्राकृतिक वस्तुओं से बने आशियाने में आधुनिक संसाधनों का अनोखा संगम, यहां ठहरने वाले हर व्यक्ति को एक अलग तरह की ताजगी और स्फूर्ति पैदा करता है।

आसपास के गांव और क्षेत्र से आने वाले लोग मेले में बने अस्थायी ठिकानों में पनाह लेते हैं। एक महीने तक चलने वाले इस मेले में मवेशियों को खरीदने से पहले इनकी अच्छे तरीके से जांच–परख करने का पूरा मौका मिलता है। मवेशियों की अच्छी तरीके से पड़ताल करने के बाद उन्हें खरीदते देखने का अनुभव अपने आप में काफी अनोखा होता है। इनके साथ कुछ समय बीताने के बाद ही इस बात को ज्यादा करीब से समझा जा सकता है। मनोरंजन समेत अन्य बातों का लुफ्त उठाने के लिए लोग यहां कुछ दिन ठहरते हैं।

सुबह से लेकर शाम तक लोग अपने पशुओं को खिलाने, चारा देने और देखभाल करने में व्यस्त रहते हैं। शहरी परिवेश से नाता रखने वाले लोगों के लिए इन्हें देखना काफी सुखद अनुभव होता है। शहरी जीवनशैली में जहां लोगों का पूरी दिनचर्या अगल–बगल के व्यक्तियों की इर्द–गिर्द ही घूमती रहती है। वहीं, ग्रामीण जीवन शैली में पशुओं की देखभाल लोगों की दिनचर्या का बेहद ही अहम हिस्सा होता है। पशु और मनुष्यों के बीच के अनूठे रिश्ते की झलक को इस मेले में करीब से देखा और समझा जा सकता है। मेले में आधुनिक और आंचलिक परिवेश की समावेशी झलक दिखती है, जो शहरी जीवन शैली वाले लोगों को अंदर से रोमांचित करने के लिए प्रर्याप्त है।

नदी तट पर मौजूद आम के घने पेड़ों और दूर तक कतारबद्ध तरीके से लगे केले के पेड़ों को सुबह सवेरे देखना किसी को प्रकृति के बेहद करीब लाकर खड़ा करने के लिए काफी है।

आसपास के दर्शनीय स्थल

आसपास के दर्शनीय स्थल

बिहार की धरती में कई ऐतिहासिक और पौराणिक कहानियां चारों तरफ बिखरी पड़ी हैं। सोनपुर मेले के आसपास भी कई ऐसे स्थान हैं, जिनका भ्रमण किया जा सकता है।

राजधानी पटना यहां से महज 25 किमी की दूरी पर स्थित है। इसका इतिहास दो हजार साल से ज्यादा पुराना है। ऐतिहासिक काल में इसे कई नामों से जाना जाता था, मसलन पाटलिग्राम, पाटलिपुत्र, कुसुमपुर, पुष्पपुर। गंगा नदी पर बना महात्मा गांधी सेतू सोनपुर को पटना से जोड़ता है। पटना का नाम हिन्दुओं की देवी पटनदेवी के नाम पर पड़ा है, जिनका ऐतिहासिक मंदिर यहां मौजूद है। पटना की विशिष्टता 490 ईसा पूर्व उस समय से उजागर हुई, जब मगध के राजा अजातशत्रु ने अपनी राजधानी पहाड़ी प्रदेश राजगीर से हटाकर पटना इस उद्देश्य से स्थानांतरित किया था, ताकि वैशाली के लिच्छवी प्रदेश पर विजय प्राप्त कर सके। जब ऐतिहासिक काल में इस मेले का आयोजन किया जाता था, तब पाटलिपुत्र एक महत्वपूर्ण शहर हुआ करता था। इसके बाद यह शहर मौर्य साम्राज्य की राजधानी के रूप में उभर कर सामने आया। उस समय गंगा और उनकी सहायक नदियों के जल मार्ग का प्रयोग करके व्यापार किया जाता था। 17वीं सदी तक पटना अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख केन्द्रों में एक था।

पूरे विश्व से कई धर्म को मानने वाले लोग पटना आते हैं। बौद्ध, जैन, हिन्दू, मुस्लिम और सिख धर्मावलंबियों का व्यापक जुड़ाव इस स्थान से रहा है। इन सभी के कोई ने कोई ऐतिहासिक तीर्थस्थल यहां मौजूद हैं। कुम्हरार और अगमकुआं में आशोक कालीन पाटलिपुत्र के भग्नावशेष देखे जा सकते हैं। पटना संग्रहालाय में मौजूद यक्षिणी की मूर्ति मौर्य काल कलाकृति का उत्कृष्ठ उदाहरण है।

तख्त श्री पटना साहिब सिखों के पांच प्रमुख तख्तों में एक है। सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह का जन्म स्थल है। इसके अलावा पटना में पांच अन्य गुरुद्वारे भी हैं, जो सिखों के अलग–अलग गुरुओं से संबंधित हैं। ये हैं, गुरुद्वारा पहिला बारा, गुरुद्वारा गोविंद घाट, गुरुद्वारा गुरु का बाग, गुरुद्वारा बाललीला और गुरुद्वारा हांडी साहिब।

पटना में ब्रिटिश कालीन वास्तुशिल्प के भी कई अनोखे उदाहरण देखने को मिलते हैं। पादरी की हवेली, हाई कोर्ट, गोलघर और सचिवालय भवन में इनके स्थापत्य कला के नमूने को नजदीक से देखा जा सकता है।

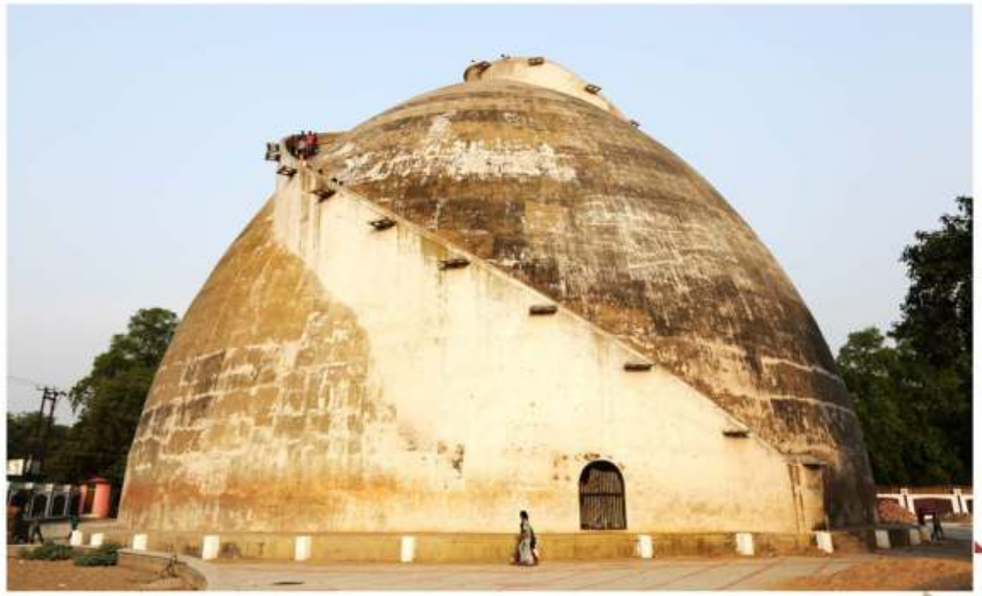

हाजीपुर में उगने वाला केले को 'चिनिया केला' कहते हैं। गंगा नदी के नजदीक फैले बड़े क्षेत्र में इनके हरे–भरे खेतों के मनोरम दृश्य को देखा जा सकता है। महात्मा गांधी सेतू के ऊपर से गुजरते हुए इनका नजारा देखने में शानदार लगता है।

हाजीपुर तिरहुत प्रमंडल में स्थित वैशाली जिला का मुख्यालय है। पटना से जोड़ने वाले इस पुल की गिनती नदी पर बने दुनिया के बड़े ब्रिजों में होती है। प्राचीन काल में पटना से गंगा नदी को पार करने के बाद जो पहला गांव मिलता था, उसे 'उत्काकला' नाम से जाना जाता था। हाजीपुर अपनी कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है। इस स्थान पर बुद्ध ने अपने प्रमुख उपदेशों में एक को दिया था। बुद्ध ने कुला गोपलाका सुता को यहीं उपदेश दिया था। बुद्ध के शिष्यों में बेहद प्रमुख आनंद की अस्थियों को यहीं स्थापित किया गया है।

हाजीपुर के नयाटोला में स्थित महा–कालेश्वर मंदिर में भगवान शिव की मूर्ति, हनुमानजी, देवी दुर्गा, चित्रगुप्त (किताबों के देव) और अन्य हिन्दू देवताओं के साथ विरजमान हैं। इस मंदिर को स्थानीय लोगों ने अपने प्रयास से बनवाया था। रामचौरा मंदिर इस शहर में मौजूद हिन्दुओं का एक अन्य महत्वपूर्ण मंदिर है।

कौन–हारा घाट गंगा और गंडक नदी के संगम का प्रमुख घाट है, जहां पूजा–पाठ और अन्य धार्मिक अनुष्ठान का अयोजन सदियों से होता आ रहा है। इस घाट का नाम भगवान विष्णु द्वारा हाथी की मगरमच्छ से रक्षा करने के कारण पड़ा है। इसी स्थान पर मगरमच्छ के शरीर से गंर्धव को मुक्ति मिली थी। गज (हाथी) और ग्राह (मगरमच्छ) के बीच इसी स्थान पर लड़ाई हुई थी। इस वजह से स्थानीय लोग इस स्थान को 'कौन–हारा' के नाम से जानने लगे हैं।

गंगा और गंडक के इस संगम स्थल पर एक 'शैवेत मठ' बना हुआ है। इसका निर्माण 18वीं सदी में नेपाली सेनापति मथावर सिंह थापा ने करवाया था। पगोडा की आकृति का बना हुआ यह मंदिर हिमालय राजवंश की कलाकृति की याद को ताजा कर देता है। इस मंदिर के अधिकांश हिस्से का निर्माण लकड़ी से किया गया है। लकड़ी पर उकेरी गई खूबसूरत कलाकृति इस मंदिर की दूसरी सबसे बड़ी खासियत है।

वैशाली का पौराणिक गांव यहां से 35 किमी दूर उत्तर–पश्चिम की तरफ मौजूद है। यहां सड़क मार्ग के जरिये आसानी से पहुंचा जा सकता है। बौद्ध स्तूप, अशोक स्तंभ, अभिषेक पुष्करणी समेत अन्य कई पुरातात्विक महत्व के स्थल देखने को मिलेंगे। निजी वाहन के जरिए सभी स्थानों को पूरे दिन में घूमकर देखा जा सकता है। यहां हर वर्ष वैशाख पूर्णिमा के दिन वैशाली महोत्सव का आयोजन किया जाता है। वैशाली से चार किमी की दूरी पर स्थित कुंडलपुर ग्राम में अप्रैल के मध्य में जैन के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मोत्सव भी मनाया जाता है। इस धरती को यह सौभाग्य प्राप्त है कि तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व भगवान बुद्ध का आगमन यहां दूसरी बार हुआ था।

बिहार में पटना के बाद मुजफ्फरपुर सबसे अधिक आबादी वाला शहर है। यह शहर अपने रसीले शाही लीची के लिए खासा प्रसिद्ध है। इसके आसपास की भूमि का प्रयोग मुख्य रूप से कृषि और बागवानी के लिए किया जाता है। यहां लीची और आम का उत्पादन बेहद बड़े पैमाने पर होता है। यह उत्तर बिहार का व्यावसायिक हब है और यह मुंबई, सूरत और अहमदाबाद के होल सेल मार्केट का बेहद प्रमुख हिस्सा है। शहर में मौजूद टेक्सटाईल मिल सूता पट्टी पर मारवाड़ी परिवार का कब्जा है। शहर के व्यावसायिक हब के रूप में मोती झील, कल्याणी चौक, पुरानी बाजार, सरैया गंज, जवाहरलाल रोड, हरिसाबा चौक, बेला औदयोगिक क्षेत्र, क्लब रोड, इस्लामपुर, शाफी दौदी मार्केट, अंदी गोला, मिठनपुरा, आम गोला, जुरन छपरा, तिलका मैदान रोड, कंपनी बाग खासा प्रसिद्ध हैं।